Date ___/___/______

Date :- 16/5/2020
Content Writer :-
Dr. Akshay Kumar Pathak
Deptt. of Economics,
Marwari College,
Darbhanga (LNMU)

Degree Part-II (Hons)
Paper - II
Content of Paper :-
Micro Economics
Module :- 1

TOPIC :- TYPES OF DEMAND
(माँग का प्रकार)

Scanned with CamScanner

माँग के प्राकृतिक विश्लेषण के आधार पर निम्नांकित तीन वर्गों में विभाजित किया गया है :-

(1) कीमत माँग (Price Demand) :-

कीमत माँग किसी वस्तु के उन मात्राओं को दिखाती है जो कि एक उपभोक्ता एक निश्चित समय में, यदि अन्य बातें समान रहे विभिन्न कीमतों पर खरीदने को तैयार है। यहाँ अन्य बातें समान रहने से तात्पर्य यह है कि इस समय में माँग को प्रभावित करने वाले तत्वों यथा आय, रुचि, सम्बन्धित वस्तुओं के कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। प्रत्येक उपभोक्ता की इस प्रकार की माँग व्यक्तिगत माँग कहलाती है परन्तु वस्तुओं एवं सेवाओं की उपभोक्ताओं की सम्मिलित माँग को बाजार माँग कहते हैं।

(2) आय माँग (Income Demand) :-

आय माँग का अभिप्राय वस्तुओं एवं सेवाओं की उन मात्राओं से है जो समय की किसी इसी अवधि में, अन्य बातों

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No. ______

के अपरिवर्तित रहने पर उपभोक्ता विभिन्न आय स्तरों पर खरीदने के लिए तैयार रहता है। अन्य बातें समान रहने से तात्पर्य माँग को प्रभावित करने वाले तत्वों में परिवर्तन नहीं होने से है। आय माँग रेखा को एंजेल वक्र/एंजिल के नाम पर 'एंजिल रेखा' के नाम से भी जाना जाता है।

जिस प्रकार कीमत माँग कीमतों तथा मात्राओं के संबंध को बताती है, उसी प्रकार आय माँग, आयों एवं माँगी गयी वस्तु एवं सेवाओं के मात्राओं के संबंध को स्पष्ट करती है अर्थात आय माँग विभिन्न आय स्तरों तथा वस्तु की क्रय की जाने वाली मात्राओं के पारस्परिक संबंध को व्यक्त करती है।

वस्तुएं दो प्रकार की हो सकती है, पहला श्रेष्ठ वस्तुएं एवं दूसरा हीन वस्तुएं। श्रेष्ठ वस्तुओं का आय माँग वक्र धनात्मक होता है अर्थात उपभोक्ता की आय बढ़ जाने से इन वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है तथा उपभोक्ता की आय घट जाने पर वस्तुओं की माँग घट जाती है। दूसरी तरफ हीन वस्तुएं जिसे गिफिन वस्तुओं के नाम से जाना जाता है, उस पर उपरोक्त नियम लागू नहीं होता।

Maharaza

Date __/__/____

(3) आड़ी या तिरछी माँग (Cross Demand):-

आड़ी माँग का अर्थ एक वस्तु के लिए माँग के उन मात्राओं के परिवर्तन से है जो उस वस्तु विशेष की कीमत में परिवर्तन के कारण न होकर किसी अन्य सम्बन्धित वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण होता है। यदि X एवं Y सम्बन्धित वस्तुएं हैं तब आड़ी माँग का अर्थ है- X वस्तु की माँग Y वस्तु की कीमत पर निर्भर करती है अर्थात X वस्तु की माँग Y वस्तु के कीमत का फलन है। इसे गणितीय सूत्र में निम्नांकित रूप से व्यक्त किया जा सकता है:-

$$Dx = f(Py)$$

आड़ी माँग स्थानापन्न वस्तुओं एवं पूरक वस्तुओं के सन्दर्भ में उत्पन्न होती है।

(a) स्थानापन्न वस्तुएं (Substitute Goods):-

स्थानापन्न वस्तुएं ऐसी वस्तुएं हैं जो एक दूसरे के स्थान पर एक ही उद्देश्य के लिए प्रयुक्त होते हैं। जैसे चाय एवं कॉफी। इन वस्तुओं के सम्बन्ध में माँग में परिवर्तन इस प्रकार होता है कि यदि एक वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तथा दूसरी स्थानापन्न वस्तु की कीमत

Maharaza

समान रहने पर उपभोक्ता पहली वस्तु की माँग में कमी करते हुए दूसरी स्थानापन्न वस्तु की माँग में वृद्धि कर देता है। अतः हम कह सकते हैं कि स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत तथा माँगी गयी मात्रा में सीधा संबंध होता है, क्योंकि एक वस्तु की कीमत में वृद्धि या कमी दूसरी वस्तु की माँग में वृद्धि या कमी कर देती है।

(ii) पूरक वस्तुएँ (Complementary Goods):

किसी एक आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए यदि दोनों वस्तुओं की माँग संयुक्त रूप से की जाती है तो वह पूरक वस्तुएँ कहलाती है। पूरक वस्तुओं में से किसी एक वस्तु की कीमत में परिवर्तन से दूसरे वस्तु के कीमत में स्वतः परिवर्तन हो जाता है। पूरक वस्तुओं की कीमत एवं माँगी गई मात्रा में उल्टा संबंध होता है।